जनजातीय वीरों के चरित्र को जीवन में उतारें : सांसद

शमक विवि में जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में कार्यशाला आयोजित

नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर।

प्रतिवर्ष 15 नवंबर को मनाए जाने वाले जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में गुरूवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि बस्तर सांसद महेश कश्यप ने कहा कि हमारे पूर्वज जनजातीय वीरों ने मुगलों और अंग्रेजों से लड़कर हमें बचाया है। हमें उनके चरित्र को अपने जीवन में उतारना चाहिए। अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि जनजातीय समाज के वीरों ने अपने स्वाभिमान एवं अस्मिता की रक्षा के लिए समाज के वीरों ने जो अप्रतिम साहस दिखाया वह प्रेरणीय है।

सांसद श्री कश्यप ने देव-दानव के कर्म का जिक्र करते हुए बताया कि भारतीय धार्मिक पुस्तकों में जनजातीय समाज की प्रेरणीय भूमिका के कई वर्णन उपलब्ध हैं। आज षड़यंत्रपूर्वक समाज को रावण और महिसासुर से जोड़ा जा रहा है। श्री कश्यप ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति को बचाने का निरंतर प्रयास करना है। परंपराएं, विरासत व संस्कृति ही हम सभी जनजातीय समाज को सदियों से जोड़ कर रखा है। कुलपति ने कहा कि शहीद वीर नारायण सिंह, भगवान बिरसा मुंडा, टंटया भील, सिदो-कान्हो, रानी दुर्गावती जैसे जनजातीय समाज के अनगिनत वीर-वीरांगनाओं ने इतिहास में अदम्य साहस का परिचय देकर भारत मां की रक्षा के लिए पूरा जीवन न्योछावर कर दिया। हम सभी अकादमिक लोगों को इस समाज के प्रति संवेदनशील होकर कार्य करने आगे आना चाहिए।

आरण्यक संस्कृति ही मूल संस्कृति : रामनाथ

मुख्य वक्ता रामनाथ कश्यप ने कहा कि अरण्यक संस्कृति ही भारत की मूल संस्कृति है, जो बाद में ग्राम संस्कृति कहलाई। रामायण, महाभारत, महराणा प्रताप का उदाहरण देते हुए रामनाथ ने कहा कि यह समाज पूजा के माध्यम से मुख्य रूप से प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का कार्य करता है। इस समाज का सामाजिक और न्याय व्यवस्था बहुत प्रभावी और आसान है। घोटुल सामाजिक व्यवस्था की पाठशाला के रूप में था जिसमें युवा सामाजिक संस्कार सीखते थे।